देवास में बिछी पहली राज्यस्तरीय "जल जाजम"

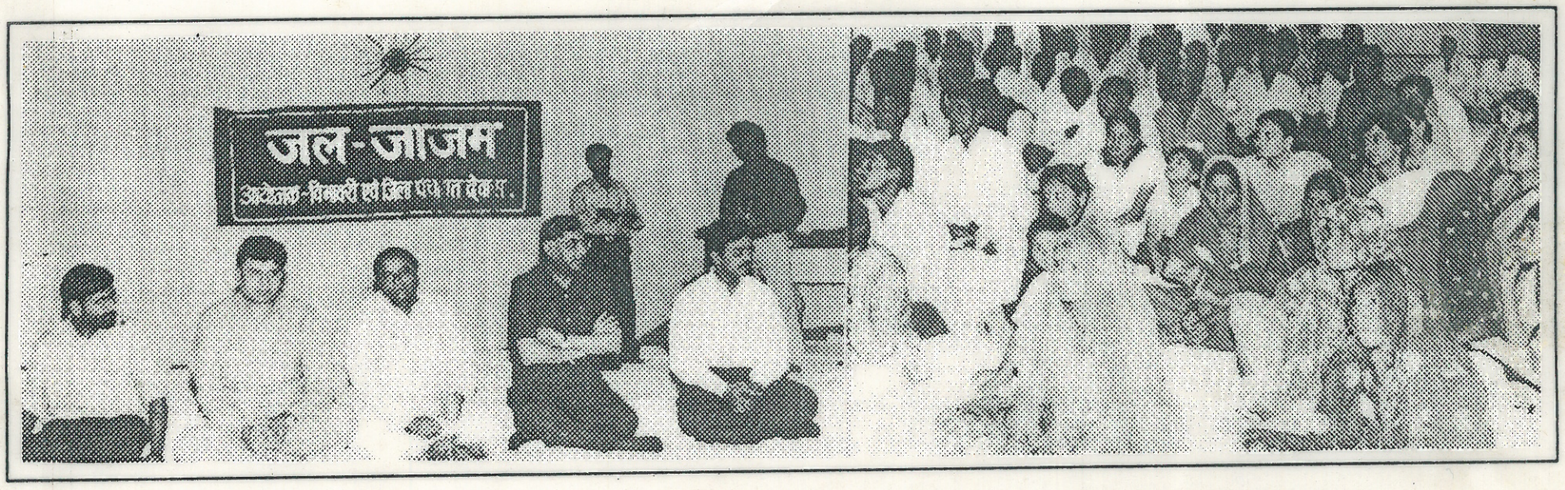

मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के पानी रोको अभियान ने प्रदेश में जनभागीदारी की अनूठी मिसाल प्रस्तुत की है। पिछले सालों में मालवा-निमाड़ ने जहां जल संकट से जूझते हुए कई गांवों में भूजल संवर्द्धन के जनभागीदारी से कई प्रयास हुए हैं, वहीं पानी आंदोलन से शुरू हुए कामों ने गांव की समाजार्थिक बदलाव में भी बड़ी भूमिका निभाई है। इन्हीं सब प्रयासों के बीच देवास में पिछले दिनों जिला पंचायत एवं एक स्वयंसेवी संस्था 'विभावरी' के मिले-जुले प्रयासों से 'जल-जाजम' की अनूठी पहल की गई। इसकी अगुवाई उन लोगों ने की, जिन्होंने पिछले सालों में जल संकट से निपटते हुए अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है।

यह संभवतः प्रदेश में अपने ढंग का पहला आयोजन रहा जिसमें पानी बचाने के काम में जुटे मैदानी कार्यकर्ताओं, भूजल के तकनीकी विशेषज्ञों, अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक एवं स्वयंसेवी संगठनों से जुड़े लोगों तथा मीडिया से जुड़े लोगों ने एक साथ एक जाजम पर बैठकर मालवा-निमाड़ अंचल में पानी बचाने तथा जमीनी पानी को बढ़ाने की बात की और कम वर्षा के चलते आने वाली गर्मियों में जल संकट से निपटने के लिए साझा रणनीति बनाई।

जल जाजम में जिन खास मुद्दों पर एक राय बनी उनमें जल आंदोलन को जन आंदोलन बनाने, इसमें महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने, भू-जल संवर्द्धन को माध्यमिक स्तर से महाविद्यालयीन स्तर तक पाठ्यक्रम में शामिल करने, पानी के मुद्दे के साथ विभिन्न सामाजिक व आर्थिक गतिविधियां जोड़कर पूरे गांव का समाजार्थिक उन्नयन सुनिश्चित करने जैसी बात प्रमुख हैं। सुबह से देर शाम तक चले इस कार्यक्रम में लोगों ने अपनी बात रखी। लोगों ने बताया कि उन्होंने अपने गांव या अंचल में किस तरह भू-जल संवर्द्धन या वाटरशेड गतिविधियां शुरू कीं और आज वे किस तरह के सकारात्मक परिणाम दे रही हैं। समस्याओं और चुनौतियों पर भी बात हुई।

आयोजन की शुरूआत में प्रदेश भर से आए सैकड़ों जनप्रतिनिधियों ने बूंदों की प्रार्थना की। लोगों ने हाथ जोड़े या अंजुरी फैलाकर पाण्डाल का वातावरण उत्साह और उमंग से भर दिया। सभागार में स्वर लहरियां गूंज रही थीं "हे नन्हीं बूंदों! जीवन के लिए धरा पर कुछ देर थमो..... जमीन की नसों में बहो। और धरती की सूनी कोख पानी से भर दो।"

देवास जिले के पानपाट की रेशमबाई भी बोलीं तो बालोदा लक्खा के किशोर सिंह भी। ठेठगांव से आए इन बूंदों के पुजारियों के चेहरों पर खुशी की चमक तथा आत्मविश्वास साफ देखा गया है। उन्होंने अपनी बात पूरे वजन के साथ रखी। उन्होंने राह में आने वाली अड़चनों और ग्रामीणों की संकल्प शक्ति को भी रेखांकित किया। झाबुआ के काकरदा के चैन सिंह, पेटलावद के लक्ष्मण सिंह, धार जिले से बदनावर की अनुराधा मोदी, सरदारपुर की शीला, खंडवा जिले से धनगांव के छोगालाल, डण्ठा गांव के छीतरमल, देवास जिले के पानपाट की रेशमी बाई, कालीबाई, थांदला के भूपेन्द्र सिंह, उज्जैन जिले से बालोदा लक्खा के किशोर सिंह कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने जाजम की चर्चा को सार्थक बनाया।

प्रदेश भर से आए सैकड़ों जनप्रतिनिधियों ने बूंदों की प्रार्थना की। लोगों ने हाथ जोड़े या अंजुरी फैलाकर पाण्डाल का वातावरण उत्साह और उमंग से भर दिया। सभागार में स्वर लहरियां गूंज रही थी "हे नन्हीं बूंदों! जीवन के लिए धरा पर कुछ देर थमो..... जमीन की नसों में बहो। और धरती की सूनी कोख पानी से भर दो।"

विभावरी के सचिव सुनील चतुर्वेदी ने जल जाजम की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह एक आयोजन भर नहीं है.... यह एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। यह पानी के लिए काम कर रहे लोगों के बीच संवाद और साझे कदम की अवधारणा है। प्रदेश में पिछले दिनों जिस बड़े पैमाने पर स्व इच्छा एवं जनभागीदारी से इतना सारा काम हुआ है, उसके बीच नेटवर्क बहुत जरूरी है।

जिला पंचायत अध्यक्ष नारायण सिंह चौधरी, केन्द्रीय भू-जल बोर्ड के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. सलीम रोमानी, स्वयंसेवी संगठन से जुड़े तपन भट्टाचार्य, पत्रकार क्रांति चतुर्वेदी तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी नीतेश व्यास भी शुभारंभ सत्र के अवसर पर जाजम में उपस्थित थे। श्री चौधरी ने कहा कि सरकार के साथ-साथ जलसंकट पर सोचना और इसके लिए रणनीति बनाना समाज का भी दायित्व है। जनभागीदारी से ही पानी की लड़ाई जीती जा सकती है। थोड़े से प्रयास की जरूरत है शुरूआत करने भर की, फिर तो लोग आते रहेंगे और कारवां बन जाएगा। देवास जिले द्वारा प्रदेश स्तर की जाजम आयोजित कर अच्छी शुरूआत करने पर उन्होंने आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने बताया कि जिला पंचायतों को मिलने वाली ग्यारहवें वित्त आयोग की राशि इन्हीं कार्यों पर दी जा रही है।

समापन सत्र में राज्यसभा सदस्य प्रफुल्ल माहेश्वरी ने कहा कि मुख्यमंत्री ने प्रदेश में जल संवर्द्धन के कामों को प्राथमिकता दी है। सकारात्मक परिणामों से सिंचाई के लिए पानी व पेयजल उपलब्ध हो रहा है। उन्होंने सांसदों, विधायकों से आग्रह किया कि वे सांसद/विधायक निधि से जल संवर्द्धन व संरक्षण जैसे कामों के लिए अधिक से अधिक राशि उपलब्ध कराएं। उन्होंने विभावरी द्वारा महिलाओं के माध्यम से की जा रही वाटरशेड गतिविधियों की सराहना की। कलेक्टर अशोक बर्णवाल ने कहा कि हर जगह सरकारी खर्चे से काम नहीं किया जा सकता। जरूरी है कि लोग अब खुद आगे आएं व जनभागीदारी से विकास सुनिश्चित हो सके। विधायक श्याम होलानी ने कहा कि प्रदेश भर में वाटरशेड समितियां आशा के अनुरूप काम कर जनभागीदारी से अच्छा काम कर रही हैं।

अगली जल जाजम धार जिले के बदनावर व उज्जैन जिले के बालोदा लक्खा में होगी जहां देवास में बनाई साझा रणनीति के अमल व परिणामों पर चर्चा होगी। लोग अपने-अपने अंचलों में लौटे हैं ठोस निर्णय, गंभीर समझ, संकल्प शक्ति और दुगने उत्साह के साथ काम करने के लिए।